भगवद् गीता का ज्ञान – (9)

" निर्गुण-निराकार ईश्वर (ब्रह्म) की उपासना करें या सगुण-साकार ईश्वर की? "

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 12वें अध्याय के प्रथम श्लोक में जिज्ञासु अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से पूछते हैं – "जो अनन्य-प्रेमी भक्त आपको (अर्थात सगुण-साकार ईश्वर को) और दूसरे जो केवल अविनाशी निर्गुण-निराकार ईश्वर को श्रेष्ठ-भाव से भजते हैं, उन दोनों प्रकार के उपासकों में अति-उत्तम योगी कौन हैं?" **(गीता - 12:1)**

- अर्जुन के प्रश्न के उत्तर में दोनों प्रकार के उपासकों को श्रेष्ठ बताते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं –

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते । श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥१२:२॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥१२:३॥

संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥१२:४॥

अर्थात - "मुझमें मन को एकाग्र करके जो भक्त-जन निरन्तर अति श्रद्धा से मुझ **सगुण-साकार ईश्वर** की उपासना करते हैं, वे मेरे मत में अति उत्तम योगी हैं।" **(गीता - 12:2)**

"परन्तु जो मनुष्य सम्पूर्ण इन्द्रियों को भली प्रकार वश में करके उस सर्वव्यापी, अचिन्त्य और सदा एक-रस रहने वाले, नित्य, अचल, अविनाशी, अकथनीय, **निराकार ब्रह्म** की श्रेष्ठ-भाव से उपासना करते हैं, वे प्राणी-मात्र के हित में रत और सब में समान भाव रखने वाले योगी मुझको (अर्थात ईश्वर को) ही प्राप्त होते हैं।" **(गीता - 12:3, 12:4)**

- उपरोक्त तीन श्लोकों का अभिप्राय यह हुआ की साकार और निराकार ईश्वर, दोनों की उपासनाएँ श्रेष्ठ हैं और दोनों से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। परन्तु, जैसा कि अगले तीन श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं, निराकार ईश्वर की उपासना अधिक कठिन होती है -

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥१२:५॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥१२:६॥

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् । भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥१२:७॥

अर्थात - "उन निराकार ब्रह्म में आसक्त चित्त वाले साधकों को अपनी साधना में कठिनाई ज़्यादा अधिक होती है, क्योंकि देह-अभिमानियों के द्वारा किसी अव्यक्त विषय की प्राप्ति कठिनाई से हो पाती है।" **(गीता - 12:5)**

"हे अर्जुन! दूसरी ओर जो भक्त सरल स्वाभाव से अपने कर्मों को ईश्वर में समर्पित करते हुए मुझ सगुण-साकार ईश्वर को ही अनन्य भक्ति योग से निरन्तर चिन्तन करते हुए भजते हैं, उन मुझ में चित्त लगाने वाले भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्यु रूप संसार-सागर से उद्धार करता हूँ।" z**(गीता - 12:6, 12:7)**

- **टिप्पणी-1 :** परम-श्रद्धेय स्वामी रामसुख दास जी ने **"श्रीमद्भगवत गीता - साधक संजीवनी (परिशिष्ट-सहित)"** में पृष्ठ संख्या 816-17 पर उपरोक्त दो प्रकार की उपासनाओं के अंतर को समझाने के लिए सगुण-साकार ईश्वर के उपासक को बिल्ली के छोटे बच्चे औरनिर्गुण-निराकार ईश्वर (ब्रह्म) के उपासक को बन्दरी के छोटे बच्चे की तरह बताया है।
  - जिस प्रकार बिल्ली का छोटा बच्चा पूरी तरह अपनी मां पर निर्भर रहता है, वैसे ही सगुण ईश्वर का उपासक अपने आपको ईश्वर के भरोसे छोड़ देता है। वही ईश्वर उस भक्त को सँभालते हैं और वही उसके अज्ञान रूप अंधकार को मिटाकर उस का उद्धार करते हैं। सगुण ईश्वर के उपासक ईश्वर को परम कृपालु मानते हैं और उन्हीं की कृपा से वे सभी कठिनाइओं को आसानी से पार करते हुए शीघ्र भगवत-प्राप्ति कर लेते हैं।
  - दूसरी ओर, जिस प्रकार बन्दरी का छोटा बच्चा अपनी शक्ति पर निर्भर रहते हुए अपनी मां को पकड़े रहता है और अपनी पकड़ को ही अपनी सुरक्षा मानता है, वैसे ही निर्गुण ईश्वर का उपासक अपनी साधना को अपनी आध्यात्मिक उन्नति का आधार मानता है। उसे तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति स्वयं करनी होती है और अपना उद्धार स्वयं करना होता है। ऐसे उपासक अपने उपास्य-तत्त्व (ईश्वर) को निर्गुण, निराकार और उदासीन मानते हैं। अतः उन्हें ईश्वर की कृपा का अनुभव वैसा नहीं हो पाता जैसा कि सगुण ईश्वर के उपासकों को होता है। इसीलिए वे तत्त्व की (ईश्वर की) प्राप्ति में आने वाले विघ्नों को दूर करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, जिसके फल-स्वरुप उन्हें ईश्वर की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

- **टिप्पणी-2 :** श्लोक 12:3 में निर्गुण-निराकार ईश्वर (ब्रह्म) के लिए निम्नलिखित आठ विशेषण लगाए गए हैं, जिनके अर्थ **"श्रीमद्भगवत गीता - साधक संजीवनी (परिशिष्ट-सहित)"** के आधार पर नीचे दिए जा रहे हैं -
  1. **अक्षर** - जिसका क्षरण नहीं होता, अर्थात जो क्षीण नहीं होता
  2. **अनिर्देश्य** - जो भाषा और वाणी से परे है
  3. **अव्यक्त** - जो व्यक्त नहीं है, अर्थात जिसका कोई रूप या आकार नहीं है
  4. **सर्वव्यापी** - जो सभी स्थानों, कालों, वस्तुओं और व्यक्तियों में व्याप्त है
  5. **अचिन्त्य** - जो मन तथा बुद्धि से परे है
  6. **कूटस्थ** - जो एक रस में रहता है
  7. **अचल** - जो आने-जाने की क्रिया से सर्वथा रहित है
  8. **ध्रुव** - जिसकी सत्ता निश्चित और नित्य है।